नाम:- विजय कुमार झा (सहायक प्राध्यापक) तारकेश्वर नारायण अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय हरिगांव भोजपुर

विषय:- C-4

कक्षा:- B.Ed 1st year

प्रकरण:- गृहभाषा और विद्यालयीय भाषा

<u>विद्यालयों में भाषा</u>

दूसरे शब्दों में, भाषा में निपुणता सामान्य अध्ययन में निपुणता लाने के साथ-साथ व्यक्तित्व में भी निखार लाती है। लेकिन कौन-सी भाषा? हिन्दी, अँग्रेज़ी या मातृभाषा? इस सवाल को भारतीय सन्दर्भ में उठाए जाने की ज़रूरत है।
देश की बहुभाषाई प्रकृति के चलते भारत में हमने त्रिभाषी सूत्र अपनाया है जिसमें हर राज्य प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में सीखने पर ज़ोर देता है। ऐसा होना भी चाहिए। बच्चे का मनोवैज्ञानिक व सामाजिक विकास मुख्यत: उस भाषा पर निर्भर करता है जिसका बच्चे को घर में, आस-पड़ोस मेंं और पहली बार स्कूल जाने पर अनुभव होता है। यही उस बच्चे की मातृभाषा या पहली भाषा होती है। भारत में दूसरी भाषा सम्पर्क भाषा होती है जो या तो हिन्दी होती है या अँग्रेज़ी। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस राज्य में निवास करते हैं। इसके साथ ही हिन्दी को राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा की तरह भी देखा जाता है और अँग्रेज़ी को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा के तौर पर देखा जाता है।

तीसरी भाषा मातृभाषा के अलावा कोई भारतीय भाषा होती है जो बच्चा 'राष्ट्रीय एकीकरण' को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए सीखता है। इस सूची में संस्कृत शामिल है।
अब तक अधिकांश राज्य दूसरी और तीसरी भाषाएँ सीखने के काम को प्राथमिक शिक्षा के बाद तक के लिए टालते रहे हैं। प्रारम्भिक केन्द्र बिन्दु मातृभाषा रही है। परन्तु हाल के कुछ वर्षों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नौकरियों के बाज़ार में हो रही हलचल ने अँग्रेज़ी सीखने के महत्व को बढ़ा दिया है। स्वाभाविक तौर पर समाज के सभी वर्गों से आ रही माँग के जवाब में देश के हर कोने और हर नुक्कड़ पर निजी क्षेत्र के अँग्रेज़ी माध्यम वाले 'कॉन्वेन्ट' और 'पब्लिक' स्कूल उठ खड़े हुए हैं। यहाँ तक कि उन राज्यों में भी जहाँ सरकारी स्कूल मातृभाषा में ही पढ़ाते हैं, कई स्कूलों ने प्रारम्भिक स्तर पर अँग्रेज़ी सीखना अनिवार्य कर दिया है।
किसी भी शिक्षाविद् के लिए यह चुनौतीपूर्ण स्थिति है और बेचारे बच्चे के पास इस मामले में चुनाव

की कोई स्वतंत्रता नहीं है। हालाँकि शुरुआत करने के लिए मातृभाषा से बेहतर कुछ नहीं है, पर ऐसी स्थिति में कोई क्या करे जब एक बच्चे को प्रारम्भिक स्तर पर तीन नहीं तो कम-से-कम दो भाषाएँ सीखना अनिवार्य हो?

रोचक बात यह है कि यह स्थिति खास भारतीय सन्दर्भ में ही देखने में आती हो, ऐसा नहीं है। गोल्डा मायर माउण्ट कैरमल अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र में कार्यरत वरिष्ठ शिक्षिका और पाठ्यक्रम निदेशक जैनेट हर्शमैन के निम्नलिखित कथन पर विचार कीजिए: "हमने सीखने में आने वाली दिक्कतों और नव साक्षरता पर पहले कई कोर्स चलाए हैं। इन कोर्सों के अन्त में हम हमेशा भाग लेने वालों से भविष्य के लिए सुझाव माँगते हैं, और इसमें द्विभाषा और बहुभाषा प्रयोग का मुद्दा ज़ोर-शोर से उठकर आया। यदि कोई बच्चा घर में अपनी मातृभाषा, बाहर सड़कों पर कोई अन्य भाषा और स्कूल में एक तीसरी भाषा ः जैसे अँग्रेज़ी ः सुनता है, तब उसे किस भाषा में पढ़ना-लिखना सिखाया जाना चाहिए?"

मातृभाषा

इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते हुए हमें पहले बच्चे की मातृभाषा का निर्धारण करना पड़ेगा। यह उतना आसान नहीं है जितना सोचने में लगता है। उदाहरण के लिए, देश के हिन्दी भाषी क्षेत्र के स्कूलों ने हिन्दी को मातृभाषा माना है। पर क्या यह वाकई सही है? राजीव गाँधी विद्यालय में मेरे पास ऐसे विद्यार्थी थे जो मराठी, सिन्धी, बुन्देलखण्डी और नेपाली आदि भाषाएँ बोलते थे। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश बच्चे ऐसी बोलियाँ बोलते हैं जो हिन्दी से भिन्न हैं। इस तरह आमतौर पर हमारे सामने ऐसी स्थिति होती है कि स्कूल में बच्चे की पहली भाषा मातृभाषा न होकर हिन्दी होती है जिसे तार्किक रूप से दूसरी भाषा की तरह देखा जाना चाहिए। इसका मतलब है कि आदिवासी बोली बोलने वाले बच्चे के लिए हिन्दी सीखना उतनी ही मुश्किलें खड़ी करेगा जितना कि अँग्रेज़ी सीखना। घर पर मातृभाषा सीखना काफी स्वाभाविक तौर पर होता है और बच्चा इस काम को खासे असरदार ढंग से करता है। यह प्रक्रिया बिना किसी सोची-विचारी योजना या प्रयास के अपने आप घटती है; क्रमबद्ध तरीके से कोई शिक्षण नहीं होता। बच्चे के आस-पास रहने वाले लोग, वयस्क भी और दूसरे बच्चे भी, भाषा पर अधिकार करने की इस प्रक्रिया में मदद करते हैं। हम कह सकते हैं कि हर बच्चा अपनी मातृभाषा काफी कारगर ढंग से सीखता है, बिना किसी योजनाबद्ध या व्यवस्थित शिक्षण के और बगैर किसी औपचारिक विद्यालय जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि वहाँ भाषा को ऐसे साधन की तरह देखा जाता है जो बच्चे की अभिव्यक्ति क्षमता और सामाजिक क्रियाशीलता को समृद्ध करता है।

मातृभाषा पर अधिकार हो जाने के बाद बच्चे को इस काबिल हो जाना चाहिए कि वह दूसरी भाषाएँ सीखने की ओर बढ़ सके। माउण्ट कैरमल प्रशिक्षण केन्द्र कोर्स की विवरण-पुस्तिका कहती है: "जिन बच्चों की अपनी मातृभाषा पर अच्छी पकड़ है, वे ज़रूरत के अनुसार किसी भी दूसरी भाषा पर आसानी से और बहुत जल्दी अधिकार कर लेंगे। उनके लिए ये सुनना भी ज़रूरी है कि उनकी भाषा दूसरों के

लिए मान्य है, ताकि अपनी संस्कृति में उनका विश्वास बढ़ जाए और अपनी मातृभाषा बोलने के बारे में वे अधिक आश्वस्त हो जाएँ